वर्ष :: 33 अंक : 20
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

प्रकाशन का 33 वां वर्ष

/mithilavarnan

मिथिला वर्णन

स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान

14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बोकारो :: रविवार, 12 फरवरी, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

फिर खुलेगी ठंडे बस्ते में पड़ी फाइल

सख्ती... वेलमार्क अस्पताल मामले में जिला प्रशासन कार्रवाई को तैयार, पल्स अस्पताल से भी बड़े घोटाले का होगा खुलासा

-: शशांक शेखर :-

बोकारो : धोखाधड़ी की बुनियाद पर खड़ा किये गये बोकारो के नयामोड़ स्थित 'वेलमार्क' अस्पताल से जुड़ीं गड़बड़ियों को लेकर जिला प्रशासन कार्रवाई को तैयार है। प्रशासन ठंडे बस्ते में पड़ी इसकी फाइल खुलवाने जा रहा है। संदिग्ध कागजात के साथ-साथ इस अस्पताल से जुड़े विभिन्न तबके के लोगों की संदिग्ध भूमिका की फिर से जांच होगी। सूत्रों से प्राप्त रिकॉर्ड के मुताबिक बैंक लेन-देन, शेयर में निवेश दवा कालाबाजारी आदि में करोड़ों रुपए का घपला हुआ है। इस पूरे मामले का पटाक्षेप जल्द होने की संभावना है। प्रशासनिक सूत्रों की मानें तो आर्थिक घपलेबाजी की जानकारी इमकम टैक्स विभाग, डीआरआई (राजस्व खुफिया निदेशालय) को दी गई है। पिछले 10 साल का रिटर्न देखा गया है। कुछ की भूमिका संदिग्ध पायी गई है, क्योंकि रिटर्न में गड़बड़ी मिली है। इस संवाददाता ने जब आयकर और डीआरआई के संबंधित सूत्रों से खास बात की, तो पता चला कि संलिप्त लोगों के आईटी रिटर्न और दी गई सूचना में काफी अंतर है। सूत्रों की मानें तो अनाधिकृत रूप से विस्तारित किए जा रहे वेलमार्क अस्पताल के मामले की अगर गंभीरतापूर्वक जांच की गई तो रांची के पल्स अस्पताल से भी बड़े घोटाले का पर्दाफाश हो सकता है। जिस कदर इस अस्पताल के निर्माण में कई आला अफसरों की भी राशि लगने की बातें चर्चा में हैं और जिस तेजी के साथ धुधांधार रफ्तार से आनन-फानन में अस्पताल का विस्तारीकरण कर अब फेज-2 बनाया जा रहा है, वह कहीं न कहीं किसी गड़बड़झाले की ओर इशारा कर रहा है।

गौरतलब है कि बोकारो इस्पात नगर के नयामोड़ के समीप स्थित जे.एम.ए. स्टोर (टाटा कॉमर्शियल वाहन सर्विस सेन्टर) किसी जमाने में एक चर्चित नाम हुआ करता था। लेकिन, बिना बीएसएल प्रबंधन की पूवार्नुमति के उसकी जगह अवैध रूप से 'वेलमार्क' नाम से एक बड़ा अस्पताल बनकर खड़ा हो गया है। साथ ही अस्पताल प्रबंधन द्वारा अवैध कंस्ट्रक्शन (निर्माण) का कार्य बड़े पैमाने पर लगातार तेजी से किया जा रहा है। जबकि, यह जमीन कानूनी तौर पर आज भी जे.एम.ए. स्टोर के नाम पर आवंटित है। मसलन, लीज का हस्तांतरण (लीज ट्रांसफर) खबर लिखे जाने तक 'वेलमार्क अस्पताल' के नाम से नहीं हो सका है। जानकारों की मानें तो नियमतः पहले से किसी दूसरे कार्य के लिए आवंटित भूखण्ड पर बिना सक्षम प्राधिकार की अनुमति के ट्रेड बदलकर दूसरा कार्य नहीं किया जा सकता। वैसे भी बोकारो इस्पात नगर में फिलहाल लीज ट्रांसफर नहीं किया जा सकता, क्योंकि सेल (भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड) स्तर से ही इस प्रक्रिया पर रोक लगी हुई है।

जानकार बताते हैं कि बगैर बोकारो स्टील प्रबंधन की अनुमति से कोरोना महामारी के दौर में और वह भी कोविड-19 की अवधि तक बनाये गए इस अस्पताल के द्वारा कोविड मरीजों के इलाज के नाम पर भी बड़ा घोटाला पहले ही सुर्खियों में छाया रहा है।

इसके अलावा फिर उन्होंने इसे विधिवत एक बड़े अस्पताल के रूप में स्थापित कर दिया। अस्पताल के संचालक ने असली प्लॉटधारी जे.एम.ए. स्टोर के मालिक की जगह खुद उक्त आवेदन देकर न सिर्फ जिला प्रशासन को धोखा दिया, बल्कि बोकारो इस्पात प्रबंधन को भी इस मामले में अंधेरे में रखकर गुमराह किया।

कोविड अवधि तक ही मिली स्वीकृति और अब दूसरा फेज भी बना रहे

आरटीआई में भी खुलासा

अस्पताल के फेसबुक पेज पर डाली गई प्रस्तावित फेज-2 मॉडल की तस्वीर।

बोकारो स्टील प्लांट के अधिशासी निदेशक (परियोजनाएं सह-अतिरिक्त प्रभार कार्मिक एवं प्रशासन) राजीव कुशवाहा ने अपने पत्रांक- ईडी (पी एंड ए)/एलआरए/2021-835, दिनांक-18.04.2021 के द्वारा उपायुक्त के पत्र (पत्रांक- 1182/गो., दिनांक-14.04.2021) के आलोक में 'प्रोविजनल नो-ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट' (अस्थायी अनापत्ति प्रमाण-पत्र) मेसर्स जे.एम.ए. स्टोर को प्रदान किया है, जिसमें इस बात का उल्लेख है कि पूरे देशभर में कोरोना महामारी (कोविड-19) को देखते टाटा वाहन सर्विस सेन्टर को सुपर स्पेशलिटी हॉस्पीटल में बदलने की इजाजत अस्थायी रूप से कोविड-19 की अवधि तक दी जाती है और इसके उपरान्त इस अनापत्ति प्रमाणपत्र पर पुनर्विचार किया जाएगा। इस पूरे प्रकरण में सरकारी नुमाइंदों की भूमिका की भी जांच होगी। सेल/बोकारो स्टील प्लांट के महाप्रबंधक (कार्मिक) सह- केन्द्रीय जनसूचना पदाधिकारी के पत्रांक बीएसएल/पीईआरएस/आरटीआई- 9506/2022-508, दिनांक 16.04.2022 में भी वेलमार्क अस्पताल की जमीन मेसर्स जे.एम.ए. स्टोर, प्लॉट नंबर- 15ई/3, वेस्टर्न एवेन्यू, नया मोड़, बीएस सिटी, झारखंड के नाम से आवंटित किए जाने तथा कोविड-19 के मद्देनजर 18.04.2021 को टाटा कॉमर्शियल व्हीकल्स सर्विस सेंटर की जगह पर कोविड अवधि तक सुपर स्पेशलिटी हॉस्पीटल ट्रेड का प्रोविजनल परमिशन दिए जाने की बात लिखी गई है। इसके साथ ही, जेएमए स्टोर की ओर से नए नक्शे की मांग को स्वीकृत करने की बात भी आरटीआई से दी गई जानकारी में बताई गई है।

एनओसी मिलने से पहले ही बन गया बड़ा अस्पताल

यहां यह साफ हो रहा है कि रसूखदारों के लिए नियम-कानून कोई मायने नहीं रखता। इसका उदाहरण इस अस्पताल के संचालकों ने स्पष्ट कर दिखाया है। सवाल यह है कि सिर्फ कोविड-19 के मरीजों के इलाज के नाम पर बनाये गए इस अस्पताल को बीएसएल से अनापत्ति प्रमाण-पत्र मिलने से पहले ही एक बड़े और स्थायी अस्पताल के रूप में सरकारी अनुज्ञप्ति के साथ-साथ अग्निशमन विभाग और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से अनापत्ति प्रमाण-पत्र कैसे प्राप्त हो गया? यहां सबसे महत्वपूर्ण सवाल तो यह है कि जे.एम.ए. स्टोर के असली मालिक ने जब बीएसएल प्रबंधन से अपना ट्रेड बदलने और उसकी जगह अस्पताल चलाने की लिखित अनुमति मांगी ही नहीं तो फिर किसी दूसरे व्यक्ति के आवेदन पर अस्थायी रूप से ही सही, टाटा मोटर सर्विस सेन्टर का ट्रेड बदलने की इजाजत कैसे दे दी गई? और तो और, अब काफी तेजी से अस्पताल के फेज-2 के निर्माण काम भी जोर-शोर से चल रहा है। इन सबके पीछे के घालमेल और उक्त तमाम सवालों के जवाब अब प्रशासन की जांच से ही मिलने के आसार दिख रहे हैं।

इधर, प्रबंधन का यह है दावा

इधर, अस्पताल के निदेशक का दावा रहा है कि बीएसएल से एनओसी मिलने के बाद 21 अप्रैल, 2021 से वेलमार्क अस्पताल चलाया जा हा है। अस्पताल का रजिस्ट्रेशन पहले ही करवाकर रखा गया था, लेकिन बीएसएल एनओसी नहीं दे रहा था। जब बीएसएल ने एनओसी दे दिया, तब कोविड के समय से उसे चालू किया है।

– संपादकीय –

सुप्रीम कोर्ट का सख्त निर्देश

सुप्रीम कोर्ट ने देश के विभिन्न राज्यों में नशीले पदार्थों की बढ़ती तस्करी और इस गोरखधंधे में शामिल सिंडिकेट के खिलाफ सरकार और जांच एजेंसियों द्वारा बरती जा रही नरमी को लेकर सख्त टिप्पणी की है। सुप्रीम कोर्ट ने अफीम की खेती के आरोपी एक किसान की जमानत अर्जी का सरकार और जांच एजेंसियों द्वारा विरोध किए जाने पर कड़ी नाराजगी जतायी है। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने जांच एजेंसी और सरकार पर सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि छोटे लोगों पर कार्रवाई करने में जांच एजेंसियां और सरकारें आगे रहती हैं, लेकिन बड़े लोगों पर कोई कार्यवाही नहीं होती है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि छोटे किसानों को अफीम की खेती के आरोप में पकड़ रहे हो। लेकिन, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ड्रग सिंडीकेट चलाने वालों पर कोई कार्यवाही नहीं होती है। सुप्रीम कोर्ट ने सख्त लहजे में कहा कि असल गुनहगारों को पकड़िए और लोगों को नशे से बचाइए। नशे का कारोबार पिछले तीन दशक में बड़ी तेजी के साथ भारत के सभी हिस्सों में फैला है। छोटे-छोटे गांव कस्बे और यहां तक कि अब स्कूल और कॉलेजों तक में नशीले पदार्थ बड़ी मात्रा में बिक रहे हैं। युवा पीढ़ी नशे का शिकार हो रही है। पंजाब और गुजरात जैसे राज्य में युवा नशे के आदी हो गए हैं। लगभग लगभग सभी राज्यों में बड़ी आसानी के साथ नशीले पदार्थ युवाओं के बीच में उपलब्ध हैं। स्कूल कॉलेज में संगठित माफिया खुलेआम नशीले पदार्थों की बिक्री करा रहा है। नशीले पदार्थों का कारोबार पुलिस और नारकोटिक्स विभाग की मिलीभगत से चलता है। पुलिस और नारकोटिक्स विभाग छोटे-छोटे लोगों को पकड़कर उनके खिलाफ कार्रवाई करते हैं। लेकिन, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नशीले पदार्थों को उपलब्ध कराने वाले गैंगस्टर पर कोई कार्रवाई नहीं होती है। विदेश से आने वाली करोड़ों-अरबों रुपए की नशीले पदार्थों की खेप पकड़ी जाती है। मध्यप्रदेश के मंदसौर, नीमच जिले में अफीम की खेती होती है। इसके लिए बाकायदा सरकार लाइसेंस जारी करती है। कुछ किसान, जिन्हें लाइसेंस नहीं मिल पाता है, वे भी जमीनों पर अफीम की खेती करते हैं। लाइसेंस देने में रिश्वत ली जाती है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। लेकिन, जब सरकार अफीम की खेती का खुद लाइसेंस देती है और सरकार खुद अफीम को खरीदती है। जिन्हें लाइसेंस नहीं मिले और उन्होंने अफीम की खेती कर ली तो जांच एजेंसियों द्वारा उन किसानों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाता है। कितने समय तक उन्हें जेल में रखा जा सकता है? कितने समय उनकी सुनवाई होगी? कितने समय में चालान प्रस्तुत किया जाएगा? इसकी जवाबदेही नारकोटिक्स विभाग और सरकार लेने के लिए तैयार नहीं है। गरीब छोटे-मोटे अपराध के लिए कई वर्षों तक जेल में निरुद्ध करके रखना, उनके खिलाफ मुकदमा चलाने में देरी करना और बड़े-बड़े तस्करों, गैंगस्टर और माफिया को खुलेआम छोड़ देना कहां तक उचित है? हाल ही में गुजरात पोर्ट में अरबों रुपए के ड्रग पकड़े गये थे। लेकिन, अभी तक न तो उसकी जांच हुई और न ही उसके बारे में कुछ पता चला। सुप्रीम कोर्ट ने पहली बार जांच एजेंसियों की कार्यवाही को लेकर कड़ा रुख अख्तियार किया है। सुप्रीम कोर्ट के नजर में यह इसलिए भी आया कि कुछ समय पहले एक फिल्म अभिनेता के लड़के और कुछ और युवाओं पर महीनों नारकोटिक्स विभाग और मीडिया ने ट्रायल किया था, जिसमें कुछ ग्राम नशीले पदार्थ की पुड़िया जप्त होना बताया गया था। उनका कैरियर बर्बाद करने में जांच एजेंसियों और सरकार ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। बाद में यह मामला भी फर्जी मामले में फंसाने वाला पाया गया। ऐसी स्थिति में सुप्रीम कोर्ट द्वारा जांच एजेंसियों और सरकारों को सख्त निर्देश दिया गया है कि ड्रग्स सिंडिकेट और बड़ी मछलियों के खिलाफ कार्रवाई करें। सुप्रीम कोर्ट की यह सख्ती निश्चय ही स्वागत योग्य है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

हवाई जहाज से बेहतर बैलगाड़ी भली

एक संस्मरण

बालपन में हवाईजहाज को आकार में मैं उतना ही छोटा समझता था, जितना छोटा कोई जहाज आकाश की अनन्त ऊंचाई पर दिखता है। किसी आम बच्चे की तरह हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर को उड़ते देखना, खासकर सफेद धुंए की लकीर छोड़ता जेट जहाज अजीब तरह का एक्साइटमेंट पैदा करता था। हवाई जहाज जब तक नजर से ओझल न हो जाय, तब तक उसे देखते रहते थे। अगर नीचे उड़ता हुआ हेलीकॉप्टर दिख जाए तो हेलीकॉप्टर के साथ ही पतंग बन जाते थे। मैंने हवाई जहाज को कभी जमीन पर खड़ा नहीं देखा था, इसलिए मेरी समझ में वह उतना बड़ा होता होगा, जितना लंबा मेरा हाथ। मां से कभी-कभी अनुरोध करता था कि वह मुझे हवाई जहाज खरीद दे। याद आ रहा है जेठ मास रहा होगा, मां सिलाई मशीन पर कुछ सिल रही थी। तभी आकाश में बहुत ऊंच, काफी ऊंच एक हवाई जहाज गुजर रहा था। मां से फिर पूछा कि क्या वह मुझे एक हवाई जहाज खरीद कर दे सकती हैं? मां ने शान्ति से पूछा कि इतना बड़ा जहाज कहां रखोगे? यह काफी बड़ा होता है। मैंने कहा कि मैं उसे आपके बड़े वाले लोहे की सन्दूक में रखूंगा। मैं उस समय आठ साल का रहा होऊंगा। दुर्गापूजा के मेला में मेरा सबसे प्यारा पसंदीदा खिलौना था हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर। कुछ उन्नत खिलौने में हवाई जहाज को जमीन पर चलाते समय अंदर से रंगीन चिंगारी निकलती थी। बैटरी वाला भी हवाई जहाज था, जिसे देखकर असली वाले जहाज की फील आती थी, लेकिन ऐसे एडवांस खिलौने हमारी औकात से बाहर की बात थी। मैंने किसी बच्चे का एक बड़ा और सुंदर सा हेलीकॉप्टर चुरा लिया था। घर में कोई देखे नहीं, किसी को पता नहीं चले, इसलिए मैं रातों को उस खिलौने से खेलता था, जब सभी लोग सो जाते थे। एक रात मेरी चोरी पकड़ी गयी। मेरी खूब पिटाई हुई। रात में उस खिलौने को उसके असली हकदार के घर के दरवाजे पर रख दिया गया, ताकि उसका खिलौना उसे वापस मिल जाय। बाद में मां ने एक खिलौना जहाज मेले से मंगवाकर दिया था।

हमलोग जिस कालखंड और सामाजिक आर्थिक परिवेश से आते थे, वहां ऐसे एडवान्स महंगे खिलौने निश्चित ही रईस लोगों के बच्चों के लिए होते होंगे, आज की तरह नहीं कि औसत आमदनी वाले मां- बाप भी अपने बच्चों को एक न एक बार ऐसा महंगा खिलौना खरीद देते हैं।

याद आ रहा है कि कुछ साल पहले श्रीश को ऐसे ही बैटरी वाला हवाई जहाज पसंद आ गया था। वह लेना चाहता था। श्रीश की माताजी उस महंगे खिलौने के खिलाफ थीं, लेकिन मैंने खरीदकर दे दिया। मुझे मेरा अपना बालपन याद आ गया। पहली बार हवाई जहाज को जमीन पर खड़ा फिर दहाड़ते हुए आकाश में उड़ता हुआ मैंने पटना में देखा था। बड़ी बहन के ससुराल पटना पहली बार जाने के बाद मैंने एयरपोर्ट घूमने की इच्छा जाहिर की। एयरपोर्ट के रनवे से बाहर सड़क पर मैं भी हवाई जहाज को उड़ता हुआ देखने के मजमे में शामिल था। बहन के ससुर स्वर्गीय सत्यनारायण झा बिहार सरकार के अभियंता प्रमुख थे। अक्सर दिल्ली और अन्य जगह के लिए हवाई यात्रा करते थे। उनके एयर टिकट, बैग स्टिकर, हवाई जहाज में मिलने वाला टॉफी और अन्य छोटे छोटे सामान मैं ले लिया करता था। हवाई जहाज में सफर करने वाले लोगों के बारे में मेरी कल्पना थी कि हवाई जहाज में बड़े-बड़े लोग सफर करते हैं, वे बड़े खास होते हैं, बड़े अमीर होते हैं। वे एलीट होते हैं। ठीक से याद नहीं कि पहली हवाई यात्रा मैंने कब की थी? सम्भवतः बाबूजी के साथ या फिर अकेले, मगर उस यात्रा का टिकट मैंने ट्रॉफी की तरह संभाल रखा था। मैंने आकाश से छोटे-छोटे घर देखे थे। बादल को नजदीक से देखा था। जी कर रहा था कि जहाज उतरे ही नहीं, बस उड़ता रहे। उस पहली यात्रा का टिकट आज भी मेरी किसी पुस्तक के पन्नों के बीच मिल जाएगा।

अनगिनत हवाई यात्रा के बीच पता नहीं कब बालपन का वह आकर्षण एक उत्कट विकर्षण में बदल गया। उड़ने का शौक अब कहने लगा कि कितना उड़ोगे आकाश असीमित है, आखिरी ठिकाना जमीन ही है। ग्रेविटी की फांस से बाहर नहीं निकल पाओगे। एक समय उड़ने वाले जो बड़े विशिष्ट और बड़े लग रहे थे, एकाएक एहसास हुआ कि ये अधिकतर आमलोग ही हैं, जो खास होने और दिखने का स्वांग कर रहे हैं। ये कूल दिख रहे हैं, लेकिन अंदर कोई आंच जल रही है। जल्दी पहुंचने की हड़बड़ी में लोग एक-दूसरे पर चढ़कर आगे बढ़ना चाहते हैं। सबके सब भाग रहे हैं। एक अजीब सा तनाव है, हवाई जहाज का इंजन डरावनी आवाज पैदा करता है, जैसे कान को छेद रहा हो। फिर जेठ की दुपहरी का वह किस्सा याद आ गया, मां याद आ गयी, वह अपनी सिलाई मशीन पर कपड़े सिल रही थी। लगा कि मुड़कर बीते कल में चला गया, मां को बताता कि हवाई जहाज दूर से ही अच्छा लगता है। वह बचपन और बैलगाड़ी याद आ गई। बच्चे थे। तब गुजर रहे किसी बैलगाड़ी पर बैठ जाया करते थे। कभी गाड़ीवान हमें भगाता था, तो कभी बैठने भी देता था। अब न वह बचपन है, न ही वह वह बैलगाड़ी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार व विश्लेषक हैं।)

पद्म पुरस्कार चयन की 'चूक'

व्यंग्यात्मक आलेख

– अनिल कुमार सिन्हा –
देवघर, झारखंड।

पद्म पुरस्कारों की घोषणा सुनकर मुझे अति प्रसन्नता हुई कि स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव जी को मरणोपरांत पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मैं मानता हूं कि वे अवश्य ही इस योग्य थे कि उनको इस पुरस्कार से नवाजा जाए। समाजवादी विचारधाराओं के पथ पर अग्रसर, सर्वहारा वर्ग के मसीहा के रूप में वे लंबे समय तक याद किए जाएंगे, पर इस कड़ी में एक और बहुत ही योग्य उम्मीदवार का चयन होना छूट गया, जिसका मुझे बड़ा ही खेद है। चयनकताओं को मैं याद दिलाना चाहूंगा कि समाजवाद के एक बड़े ही पैरोकार एवं गरीबों, पिछड़ों तथा सर्वहारा वर्ग के मसीहा श्री लालू प्रसाद यादव जी का इस से फेरहिस्त में नाम न होना बड़े ही खेद का विषय है। दोनों ही नेता अत्यंत ही गरीब परिवार से थे और समाज की निचली पंक्ति से उभरकर इतने ऊंचे पायदान पर पहुंचे। दोनों का ही सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन समान रूप से संघर्षपूर्ण रहा। दोनों ही नेता देश पर थोपे गए नेता नहीं थे, बल्कि अपने अपने प्रदेश के जननायक थे। एक और बड़ी समानता थी दोनों में, दोनों ही भगवान राम के अस्तित्व में शायद विश्वास नहीं करते थे। एक ने आडवाणीजी की राम रथयात्रा रोकी, तो दूसरे ने अयोध्या में कारसेवकों पर गोली चलवाई। भगवान राम के मंदिर बनने के दोनों ही घोर विरोधी थे। दोनों ने ही राजनीति में तुष्टिकरण की नीति अपनाई, यह सर्वविदित है।

अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत में दोनों ही गरीबी और बेरोजगारी से संघर्ष करते हुए राजनीतिक पथ पर काफी आगे बढ़े। दोनों का ही राजनीतिक जीवन लगभग एक जैसा था। दोनों ने ही साइकिल पर सवारी कर अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की और अपने जीवन के उत्कर्ष पर पहुंचते-पहुंचते हजारों करोड़ के मालिक बन गए। यहां तक कि इनके रिश्तेदार एवं बंधु-बांधव भी करोड़ों के मालिक बन गए एवं सबों की गरीबी दूर हो गई। इतनी अपार संपत्ति इन्होंने कहां से और कैसे अर्जित की, यह हमारे विवेचना का विषय नहीं है, परंतु एक बात तो तय है कि दोनों का राजनीतिक जीवन बिल्कुल एक जैसा रहा और लोकप्रियता में दोनों ही अपने-अपने प्रदेश में अव्वल हैं।

यह अलग बात है कि लालू जी के राजनीतिक विरोधियों ने उन्हें फंसा दिया (जैसा कि वे और उनके समर्थक कहते हैं) और उन्हें जेल की सजा भी काटनी पड़ी, जबकि मुलायम जी इस मामले में तेज निकले और उनके विरोधी उनका कुछ बाल-बांका भी नहीं कर पाए। सब कुछ एक समान रहने के बाद भी चयनकर्ताओं ने स्व. मुलायम जी को पद्म विभूषण से नवाजा एवं लालूजी को नजरअंदाज कर दिया, इस बात का हमें बड़ा ही खेद है। मैं पुनः चयनकर्ताओं से मांग करता हूं कि श्री लालू जी के लिए भी इस पुरस्कार की घोषणा की जाए, ताकि इन के पदचिन्हों पर चलने वाले अन्य राजनीतिज्ञों को भी प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन मिले।

(यह लेखक के पूर्णतः निजी विचार हैं।)

सकारात्मकता की प्रेरणा लेकर विदा हो रहे विद्यार्थी

स्कूलों में रंगारंग कार्यक्रमों के साथ विदाई समारोहों की धूम, डीपीएस बोकारो में अपूर्व व अंशुल मास्टर डीपीएस, अनुष्का को मिस डीपीएस का खिताब

संवाददाता
बोकारो : बोकारो, चास सहित आसपास के स्कूलों में इस दिनों विदाई समारोहों की धूम है। बोर्ड परीक्षा से पहले 12वीं के विद्यार्थियों को रंगारंग कार्यक्रमों के साथ विदाई दी जा रही है। सेक्टर-4 स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो में बहुरंगी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ सत्र 2022-23 के 12वीं कक्षा के छात्र-छात्राओं को भावभीनी विदाई दी गई। इस दौरान बच्चों में विद्यालय से निकलकर जीवन के नए पायदान की ओर आगे बढ़ने की जहां खुशियां थीं, वहीं विद्यालय परिवार से बिछड़ने का दुख भी दिखा। छात्र-छात्राओं ने आर्केस्ट्रा प्रेजेंटेशन, नॉनस्टॉप मेलोडी, आकर्षक समूह-नृत्य, रैंप-वॉक, टैलेंट शो, काव्य-पाठ आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किए। पूरे सत्र के दौरान विद्यार्थियों के समेकित प्रदर्शन के आधार पर अपूर्व आनंद एवं अंशुल अग्रवाल को मास्टर डीपीएस और अनुष्का सिंह को मिस डीपीएस के खिताब ने नवाजा गया। वहीं, हर्ष राज मास्टर पॉपुलर, आयुषी शांडिल्य मिस पॉपुलर, हार्दिक श्री मास्टर वसेर्टाइल, संजीवनी कुमारी मिस वसेर्टाइल, आर्यन सिंह मास्टर स्टाइल आइकॉन और विष्णु प्रिया मिस स्टाइल आइकॉन टाइटल से चयनित व सम्मानित किए गए। विदा हो रहे विद्यार्थियों को स्मृति-फलक देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. एएस गंगवार ने विद्यालय से विदा हो रहे छात्र-छात्राओं के भावी जीवन और सफल करियर के प्रति अपनी शुभकामनाएं दीं। नर्सरी से लेकर 12वीं तक के छात्र-जीवन और इससे जुड़े अनुभवों को उनके सफल भावी जीवन की बुनियाद बताते हुए उन्होंने विदा होनेवाले बच्चों को सदैव सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया।

डीपीएस चास : दूसरों के प्रति कृतज्ञता, सम्मान और कर्तव्यनिष्ठता जरूरी : डॉ. हेमलता

सत्र-2022-23 के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इसमें 11वीं तथा 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन ने किया। इस दौरान हेमंत कुमार को मिस्टर डीपीएस चास, आस्था पाठक को मिस डीपीएस चास घोषित किया। इसके अलावा मिस्टर वसेर्टाइल विवेक कुमार, मिस वसेर्टाइल खुशी कुमारी, मिस्टर पॉपुलर एम. यशवंत राव, मिस पॉपुलर श्रेया प्रकाश, मिस्टर स्टाइल आइकॉन हर्षित बगरिया तथा मिस स्टाइल आइकॉन आशी शरफ को भी पुरस्कृत किया गया। विदाई समारोह में कई छात्र भावुक भी हो गए। इस अवसर पर डॉ मोहन ने विद्यार्थियों को उनकी परीक्षाओं के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि निरंतर प्रयास, कठिन परिश्रम, स्व-अनुशासन के माध्यम से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन में दूसरों के प्रति कृतज्ञता, सम्मान व कर्तव्यनिष्ठा का भाव रखने का संदेश भी दिया। उन्होंने छात्र-छात्राओं को परीक्षा में धैर्य, लगन एवं मेहनत के साथ सर्वोत्तम प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। बोर्ड परीक्षाओं के लिए उनका मार्गदर्शन भी किया। इस अवसर पर डीएस मेमोरियल सोसायटी के सचिव सुरेश अग्रवाल एवं प्रभारी प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने भी विद्यार्थियों की इस सफलता पर उन्हें बधाई दी और बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों को आगामी बोर्ड परीक्षा हेतु शुभकामनाएं दी।

मिथिला अकादमी : अमन बने मास्टर मैप्स, नंदिनी को मिस मैप्स का खिताब

मिथिला अकादमी पब्लिक स्कूल में 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया। कक्षा 12वीं के छात्रों की प्रतिभा और प्रदर्शन के आधार पर विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत कई विजेताओं का चयन किया गया। अमन कुमार मिस्टर मैप्स एवं, नंदिनी कुमारी को मिस मैप्स 2022-23 के खिताब से नवाजा गया। वहीं, कक्षा के अन्य छात्रों को विभिन्न टाइटल्स के साथ सम्मानित किया। 12 वीं के छात्र-छात्राओं ने अपनी खुशी को व्यक्त करते हुए प्राचार्य तथा शिक्षकों को धन्यवाद दिया। स्कूल के चेयरमैन हरिमोहन झा, उपाध्यक्ष जय प्रकाश चौधरी विद्यालय की संचालक संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद के उपाध्यक्ष राजेंद्र कुमार, महासचिव अविनाश कुमार झा, स्कूल के सचिव प्रमोद कुमार झा 'चन्दन', प्राचार्य अशोक कुमार पाठक ने छात्र-छात्राओं को परीक्षा में धैर्य, लगन व मेहनत के साथ सर्वोत्तम प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

विद्यालय से मिले शिक्षा और संस्कार का देशहित में करें उपयोग : सिद्धेश

नगर के सेक्टर-3सी स्थित सरस्वती विद्या मंदिर के सभागार में द्वादश कक्षा के छात्र-छात्राओं के दीक्षांत समारोह का आयोजन दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इसमें मुख्य अतिथि विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के सचिव सिद्धेश नारायण दास थे। अपने आशीर्वचन में भैया-बहनों को उनके सुखद भविष्य की कामना के साथ-साथ विद्यालय से प्राप्त शिक्षा एवं संस्कार का सदुपयोग कर भविष्य में समाज और देश के प्रति समर्पित होने का लक्ष्य दिया। उक्त कार्यक्रम में विद्यालय प्राचार्य रणसुमन सिंह ने कहा कि आप सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पदस्थापित होकर अपने को समाज को साथ ही साथ विद्यालय को गौरवान्वित करें, यही अपेक्षा है। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने मनभावन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रस्तुतियों की श्रृंखला में अनुभव कथन अनुनीत झा, देवराज, तन्मय, स्नेहा एवं एकल गीत श्रुति ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विद्यालय के सभी शिक्षक उपस्थित थे।

गुड न्यूज लेजर लाइट की चकाचौंध और रंगारंग मनोरंजन के साथ लगा बसंत मेला, शहरवासियों ने बताया लंबे समय बाद अनूठा अनुभव

बोकारो में छह साल बाद गुलजार हुआ 'बसंत'

संवाददाता
बोकारो : बोकारो में विगत पांच दशक के इतिहास में छह वर्षों से लगी ब्रेक अब दूर हो चुकी है। बसंत ऋतु की रौनक और बसंत का उत्साह एक बार फिर जग गया। बीएसएल की ओर से सेक्टर-5 स्थित पुस्तकालय मैदान में तीन दिवसीय बसंत मेला आयोजित किया गया। वर्ष 2016 के बाद इस साल बसंत मेला का आयोजन किया गया। यह 51वां बसंत मेला रहा। विदित हो कि 2016 के बाद प्लांट के आधुनिकीकरण का काम चलने लगा, उस समय सेल की स्थिति ठीक नहीं थी। इसकी वजह से मेला आदि के आयोजन पर विराम लग गया था। अब प्लांट और सेल मुनाफे में जा रहे हैं, इसलिए फिर से इसे शुरू किया गया है। 6 वर्षों के बाद लगने वाले बसंत मेला का मुख्य आकर्षण गीत-संगीत, कवि सम्मेलन, हस्तशिल्प व अन्य प्रदर्शनियां, विभिन्न प्रकार के मनोरंजक आयोजन रहे।

मेले का शुभारभ बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश ने किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने बोकारो के बसंत मेले को ऐतिहासिक बताया। उद्घाटन समारोह में उनके साथ बोकारो पावर सप्लाई कम्पनी लिमिटेड (बीपीएससीएल) के सीईओ कुमुद कुमार ठाकुर, ओएनजीसी (सीबीएम एसेट) के अधिशासी निदेशक सह- परिसम्पत्ति प्रबंधक श्री जौहरी सहित बोकारो स्टील के मुख्य महाप्रबंधक (नगर सेवाएं) बीएस पोपली, संचार प्रमुख मणिकांत धान व अन्य अधिकारी मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि पहले नगर के सेक्टर-3 में हर वर्ष बसंत मेला का आयोजन होता था, परन्तु इस बार खुले वातावरण और पर्याप्त जगह की सुलभता देखते हुए प्रबंधन ने इस मेले का आयोजन पुस्तकालय मैदान में किया। मेले में बोकारो स्टील प्लांट के विभिन्न विभागों के अलावा महिला समिति, बोकारो, जन-सम्पर्क विभाग, डालमिया सीमेन्ट सहित अन्य सरकारी व स्वयंसेवी संगठनों, शैक्षणिक संगठनों, आटोमोबाइल, खाद्य-पदार्थ, इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम समेत 110 स्टॉल लगाए गए। खास बात यह रही कि इस बार लगातार तीन दिनों तक लेजर लाइट की चकाचौंध वाले मंच पर गीत-संगीत, कवि सम्मेलन, कॉमेडी शो का भी आयोजन किया गया। यानी मेला घूमने के साथ-साथ रंगारंग कार्यक्रमों के दोहरे मजे के साथ लोगों ने बसंत मेला का आनंद लिया। बच्चों के लिए मिक्की माउस बाउंसी झूला आदि की व्यवस्था थी।

विस्थापित समस्याएं दूर होने के आसार

बीटीपीएस में डीजीएम के साथ वार्ता के बाद एक माह के लिए आंदोलन स्थगित

संवाददाता

बोकारो थर्मल : डीवीसी बीटीपीएस से जुड़े विस्थापितों की समस्याएं दूर होने के आसार दिख रहे हैं। मुख्यालय कोलकाता द्वारा निर्धारित सर्कुलर को लागू करने, पूर्व सांसद स्व बिनोद बिहारी महतो के साथ हुए त्रिपक्षीय समझौते को लागू कराने, श्रम कानून को लागू कराने सहित आठ सूत्री मांगों को लेकर भाकपा माले एवं विस्थापित एवं स्थानीय संघर्ष समिति के बैनर तले 13 फरवरी को डीवीसी बोकारो थर्मल पावर प्लांट गेट के समक्ष विशाल जन-प्रदर्शन आंदोलन शुक्रवार को डीजीएम बीजी होलकर के साथ सकारात्मक वार्ता के बाद एक माह के लिए स्थगित कर दिया गया। डीवीसी के डीजीएम के साथ उनके कार्यालय में शुक्रवार को आयोजित वार्ता में डीजीएम बीजी होल्कर, संयुक्त निदेशक एचआर रोहित कुमार, सहायक निदेशक एसए अशरफ, उप निदेशक तनीशा सिल्वी, भाकपा माले एवं विस्थापित समिति की ओर से विकास कुमार सिंह, बालेश्वर गोप, बालगोविंद मंडल, बालेश्वर यादव, वाजिद हुसैन, भोला यादव शामिल हुए। वार्ता में विस्थापितों के नियोजन हेतु सन 1991 में पूर्व सांसद स्व बिनोद बिहारी महतो एवं डीवीसी प्रबंधन के बीच हुए समझौते को लागू करने पर सहमति बनी। साथ ही बेरमो अनुमंडल पदाधिकारी की मध्यस्थता में बनी सूची को विस्थापितों को ठेका मजदूर में नियोजन देने में होने पर भी प्रबंधन ने सहमति जतायी और इसके लिए मुख्यालय से अनुमति ली जाएगी।

एएमसी एवं एआरसी ठेका मजदूरों में कई मजदूरों को नियोजन ठिकेदार एवं प्रबंधन द्वारा कुशल मजदूर के रूप में पावर प्लांट में किया गया, लेकिन कंपनी एवं ठीकेदार के द्वारा मजदूरों को अकुशल मजदूरों की तरह काम कराया जाता है। उन सभी मजदूरों का लिस्ट डीवीसी प्रबंधन जल्द मांगेगी, ताकि सही और गलत का निर्णय हो सके। वार्ता में डीवीसी प्रबंधन द्वारा पुर्नवासित रैयतों को जमीन का मालिकाना हक देने के मसले को जल्द हल करने पर सहमति बनी। डीवीसी पावर प्लांट में कार्यरत सभी मजदूरों का कंपनी एवं ठीकेदार के द्वारा इपीएफ नहीं काटने, कम मजदूरी भुगतान करने, श्रम कानूनों को लागू नहीं करने वाले ठीकेदारों पर कार्रवाई करने की बात कही। डीवीसी के ऐश पौंड से छाई ढुलाई के कार्य में लगे मजदूरों को मूलभूत सुविधाओं देने के मसले पर भी चर्चा की गई और सभी आठ सूत्री मांगों पर सहमति सौहार्द पूर्ण वार्ता में हुई। वार्ता के बाद सभी की सहमति से आंदोलन को तत्काल प्रभाव से एक माह के लिए स्थगित कर दिया गया, ताकि नये प्रबंधकों की टीम को पूरा मौका मिल सके।

नियमों को दरकिनार कर हो रहा फोर लेन का काम

बोकारो : बोकारो के उकरीद मोड़ से चास के आईटीआई मोड़ तक लगभग साढ़े आठ किलोमीटर पुरानी सड़क को फोर लेन में बदलने का काम चल रहा है। फिलहाल सड़क का निर्माण सेक्टर- 12 मोड़ से लेकर हवाई अड्डा के पूर्वी छोड़ (एलोरा होस्टल) के बीच चल रहा है। इस क्रम में सड़क के एक हिस्से को गड्ढा खोदकर उसमें मिट्टी समतलीकरण का कार्य किया जा रहा है। जबकि, सड़क का एक हिस्सा गड्ढे में तब्दील हो गया है। इन गड्ढों के बगल में सावधानी बरतने को लेकर न तो कोई साइन बोर्ड लगा है और न ही पट्टी से इसकी घेराबंदी की गई है। इसके कारण रात के अंधेरे में यह गड्ढे जानलेवा साबित हो रहे हैं। फोर लेन का निर्माण करने वाली कंपनी क्लासिक इंजीकॉम ने सेक्टर-12 मोड़ के पास एक छोटा सा बोर्ड लगा दिया है, जो लोगों को दूर से नजर नहीं आता। लोग निमार्णाधीन सड़क पर पहले की तरह ही तेज रफ्तार में चल रहे हैं, क्योंकि चास-बोकारो को जोड़ने वाली यह मुख्य सड़क है। इसके कारण हर समय पूरे क्षेत्र में दुर्घटनाओं की संभावना बनी रहती है। जानकार बताते हैं कि रात के अंधेरे में अब तक कई लोग सड़क के किनारे बने गड्ढें में गिरकर चोटिल हो चुके हैं। लेकिन, संवेदक कम्पनी के नुमाइंदे यह सब जानते हुए भी अनजान बने हैं।

मुहिम बाल अधिकार कार्यकर्ता सह मनोविज्ञानी शिक्षक डॉ. प्रभाकर का प्रयास ला रहा रंग

गली-गली में बाल अधिकार का जगा रहे अलख

संवाददाता

बोकारो : समाजसेवा के कई अलग-अलग पहलू हैं। कोई गरीबों में वस्त्रदान करता है, तो कोई भोजन कराता है। अलग-अलग तरीके से लोग मानवता की सेवा में लगे हैं। लेकिन, बच्चे, जो देश का भविष्य हैं, उन्हें उनका अधिकार और उनका बालपन बचाए रखने की मुहिम अपने-आप में अनूठी है। यह खास पहल और अभियान लगातार चला रहे हैं बोकारो के मनोविज्ञानी शिक्षक सह- बाल अधिकार कार्यकर्ता डॉ. प्रभाकर कुमार। डॉ. प्रभाकर बाल कल्याण समिति, बोकारो के सक्रिय सदस्य भी रह चुके हैं। वह पिछले लगभग एक वर्ष से लगातार शहर से गांव की झुग्गी-झोपड़ियों और गली-मुहल्लों तक जाकर खुद के खर्च से बाल अधिकार के प्रति जागरुकता अभियान चला रहे हैं। उनका कहना है कि बाल अधिकारों की जानकारी बच्चों को भयावहता से मुक्त बनाने में सहयोगी और संवेदनशील समाज निर्माण पहल की दिशा में महत्वपूर्ण है।

बीते दिनों उन्होंने हरला थानांतर्गत दुर्गा मंदिर, महुआर बस्ती, बोकारो में बच्चों संग उनके माता-पिता अभिभावकों समुदायों की उपस्थिति में बाल अधिकार सरंक्षण जागरुकता अभियान चलाया। डॉ. प्रभाकर ने कहा कि बाल अधिकार की अद्यतन जानकारी बच्चों को निर्भीक बनाते हैं। किसी भी अकल्पनीय स्थिति में बच्चों में साहस का संचार होता है। वे अपने को सुरक्षित व सहज पाते हैं। बाल-विवाह, बाल-श्रम, बाल दुर्व्यवहार, बाल दुर्व्यापार, बाल हिंसा व शोषण आदि सामाजिक बुराइयों से बच्चों को सुरक्षित रखा जानी है, अतः माता पिता अभिभावकों को बाल मुद्दों व कानून के प्रति संवेदनशील बनाया जाना महत्वपूर्ण है। जागरुकता ही सुरक्षा है। इस क्रम में बच्चों को आत्मरक्षा के भी तरीके बताए गए। अंत में बतलाये गये विषयों से संबंधित प्रश्न पूछकर बच्चों को स्टेशनरी सामग्री व चॉकलेट आदि देकर पुरस्कृत भी किया गया। इसके पूर्व राजकीयकृत मध्य विद्यालय, जरीडीह बाजार में अभियान चलाया गया। डॉ. प्रभाकर ने कहा कि उनका अभियान अनवरत आगे भी जारी रहेगा।

हफ्ते की हलचल

ऑन द स्पॉट 193 दिव्यांगों को मिला प्रमाण-पत्र

बोकारो : चास प्रखंड कार्यालय परिसर में विशेष दिव्यांग शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उपायुक्त कुलदीप चौधरी व उप विकास आयुक्त कीर्तिश्री जी. ने निरीक्षण किया। शिविर में शामिल दिव्यांग जनों से डीसी-डीडीसी ने उनकी दिव्यांगता की जानकारी ली। डीसी ने अलग-अलग डेस्क पर उपस्थित चिकित्सकों से अब तक प्राप्त आवेदन व स्वीकृत दिव्यांगता प्रमाण पत्र की जानकारी ली। डीसी ने उपस्थित सिविल सर्जन डा. एबी प्रसाद को शिविर में उपस्थित दिव्यांग जनों का ऑन स्पॉट दिव्यांगता प्रमाण पत्र निर्गत करने को कहा। सभी दिव्यांग जनों को पेंशन योजना से लाभान्वित करने के लिए बीडीओ मिथिलेश कुमार एवं अंचलाधिकारी दिलीप कुमार को निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि इस कार्य में किसी भी तरह की कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए। शिविर में कुल 212 दिव्यांगजन शिविर में उपस्थित हुए, जिनमें ऑन स्पॉट 193 दिव्यांग जनों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी किया गया।

नए अधिशासी निदेशक ने पदभार संभाला

बोकारो : राजन प्रसाद ने बोकारो स्टील प्लांट के अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) का पदभार ग्रहण कर लिया। इससे पहले श्री प्रसाद सेल के ग्रोथ डिविजन (कुल्टी) में अधिशासी निदेशक के तौर पर पदस्थापित थे। बीआईटी, सिंदरी से बीएससी (इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग) की पढ़ाई पूरी करने के बाद श्री प्रसाद ने 10 जून 1989 को बीएसएल में प्रबंध प्रशिक्षु (तकनीकी) के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की। श्री प्रसाद ने अपने कैरियर के आरंभिक 30 वर्ष सीआरएम में बिताए, जहां उनके कुशल नेतृत्व में उत्पादन, उत्पादकता व अनुरक्षण से संबन्धित कई अहम पहल हुई। जनवरी 2019 में उन्हें बीएसएल के सीजीएम (इलेक्ट्रिकल) की जिम्मेदारी दी गई। तदुपरान्त अप्रैल 2019 में श्री प्रसाद का स्थानांतरण सीजीएम (सीआरएम-3) के तौर पर हुआ और गत वर्ष पदोन्नति के साथ ही उनकी पदस्थापना ग्रोथ डिविजन, कुल्टी में अधिशासी निदेशक के तौर पर की गई थी। श्री प्रसाद के नेतृत्व में बीएसएल के कार्मिक एवं प्रशासन प्रभाग को नई दिशा मिलेगी।

शिविर लगाकर दी गई फाइलेरियारोधी खुराक

बोकारो : जिले के जरीडीह बाजार के आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 38 में नन्हे बच्चों तथा बड़ों के बीच समाजसेवी अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने कृमि मुक्ति दवा की खुराक खिलाकर अभियान का शुभारंभ किया। बैक्टरजनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत एमडीए कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न स्वास्थ्य केंद्रों एवं आंगनबाड़ी केंद्रों में फाइलेरिया रोधी दवा डीईसी एवं अल्बेंडाजोल खिलायी गई। वहीं 1 से 2 वर्ष के बच्चों के बीच कृमि मुक्ति दवा की खुराक दी गई। यहां सेविका पिंकी देवी, बबीता देवी, अभियान के संचालन के अलाव रंजीत कुमार मुख्य रूप से मौजूद थे।

तिलका मांझी को इतिहास ने नहीं दिया तवज्जो : योगेन्द्र

बोकारो : नगर के सेक्टर-8 स्थित विस्थापित चौक के समीप में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले सेनानी तिलका मांझी की जयंती मनाई गई। इसकी अध्यक्षता वीरू मुंडा ने की तथा संचालन गौरांग चंद्र पातर ने किया। तिलका मांझी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए योगेन्द्र कुमार चौधरी ने कहा कि 1857 के सिपाही विद्रोह से लगभग सौ साल पहले आंदोलन का बिगुल फूंकने वाले तिलका मांझी को इतिहास में तवज्जो नहीं दी गई। आज हम सभी को ऐसे महापुरुषों से देशहित में समर्पण की प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। मौके पर शिवानंद, कुलदीप कुमार महतो, नरेश कुमार, गगन दास, नरेश राम, सुबोध कुमार, नागेंद्र, सुनील, अनमोल, गणेश कुमार, जयंत दत्ता, नंदू कुमार, बीरेंद्र कुमार, चंदन कुमार, विजय साव, समरेश सिंह सहित कई लोग मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन कुलदीप कुमार कुशवाहा ने किया।

ताजिकिस्तान में फंसे बोकारो, धनबाद, गिरिडीह और हजारीबाग के श्रमिकों की बदहाली, सरकार से वतन वापसी की गुहार

चार महीने से वेतन नहीं, दाने-दाने को हैं मोहताज

कहकशां बेग़म

गोमिया : बोकारो जिला सहित धनबाद, गिरिडीह और हजारीबाग जिलों के कुल 36 प्रवासी मजदूर ताजिकिस्तान में फंसे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से उन्होंने राज्य व केन्द्र सरकार से वतन-वापसी की गुहार लगाई है। मजदूरों की मदद के लिए भारत सरकार एवं झारखंड सरकार के नाम त्राहिमाम संदेश भेजा गया है। सरकारों से कहा गया है कि जिस कंपनी में ये मजदूर काम कर रहे थे, उसने चार महीने से वेतन नहीं दिया है। पैसे के अभाव में मजदूर दाने-दाने को मोहताज हैं। बता दें कि यह कोई पहला मौका नहीं है, जब दलालों के चक्कर में पड़कर गरीब तबके के लोग विदेशों में फंस जाते हैं। इससे पूर्व ताजिकिस्तान 44 मजदूर फंसने के मामले सामने आए थे। ये सभी मजदूर पिछले चार महीने पूर्व विष्णुगढ प्रखंड के खरना के पंचम महतो के माध्यम से ट्रांसमिशन लाइन के लिए काम करने ताजिकिस्तान गए थे, जहां पिछले चार महीने से वेतन नहीं मिला है। इस कारण वे दाने-दाने के मोहताज हो गए हैं।

प्रवासी मजदूरों के हित में कार्य करने वाले सिकन्दर अली ने केंद्र व राज्य सरकार से श्रमिकों को मदद की अपील की है।

उन्होंने कहा कि रोजगार के अभाव में झारखंड में आए दिन कहीं न कहीं से इस तरह के मामले सामने आ रहे हैं। लोग रोजी-रोटी की तलाश में विदेश जाते हैं, जहां उनको यातनाएं झेलनी पड़ती हैं। ऐसे हालात में मजदूर बड़ी मुश्किल से अपने वतन लौट पाते हैं। ऐसे में सरकार को मजदूरो का पलायन रोकने को लेकर रोजगार की व्यवस्था करने की जरूरत हैं।

ताजिकिस्तान में फंसे हैं ये मजदूर

ताजिकिस्तान में फंसे मजदूरों में बोकारो जिले के गोमिया प्रखंड अंतर्गत हुरलुंग के नारायण महतो, बालेश्वर महतो, कदमा के दशरथ महतो, अशोक कुमार, करतवारी के प्रकाश महतो. धनबाद जिला अंतर्गत तोपचांची प्रखंड अंतर्गत मानटांड के दिनेश कुमार महतो, गिरिडीह जिले के बगोदर प्रखंड अंतर्गत तुकतुको के खिरोधर महतो, नागेश्वर चौधरी, रामदेव महतो, औरा के सुखदेव महतो, संतोष कुमार महुरी के गोवर्धन महतो, ढिबरा के जगरनाथ महतो, परतापुर के गणेश महतो घाघरा के कैलाश महतो, सरिया प्रखंड के अंतर्गत पिपराडीह के डुमरचंद महतो, डुमरी प्रखंड के अंतर्गत कुलगो के शंकर कुमार, सेवाटांड झरीलाल महतो, हजारीबाग जिले के विष्णुगढ प्रखंड अंतर्गत गोविंदपुर के बालेश्वर महतो, नागी के महेन्द्र महतो, करगालो के शिवशंकर साव, सारूकुदर के टुकामन महतो, नागेश्वर महतो, केन्दुवाडीह के डेगलाल गंझू, बलकमक्का के दर्शन महतो, उच्चाघाना के प्रकाश महतो, खरना के सुरेश महतो, डेगलाल महतो, महेश महतो, अशोक कुमार, सिरैय के राजेश महतो, बसरिया के सुकर महतो. टाटीझरिया प्रखंड अंतर्गत जोलमी के दौलत महतो, लालमण महतो, योधा महतो शामिल हैं।

वैलेंटाइन डे अश्लीलता फैलाने की साजिश : कमर

सतीश कुमार झा

सीतामढ़ी : एक सभ्य समाज के लिए अश्लीलता बहुत खतरनाक है और उस पर काबू पाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि इस संबंध में ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो हमें जीवन के हर चरण में अपमान का सामना करना पड़ेगा। यह बातें बिहार स्टेट उर्दू टीचर्स एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष कमर मिसबाही ने 'मिथिला वर्णन' से खास बातचीत में कही। उन्होंने अश्लीलता को उजागर करते हुए समाज से अपील की कि वे वैलेंटाइन डे जैसे अश्लील त्योहारों में किसी भी तरह से हिस्सा न लें। सोशल मीडिया ऐसे त्योहारों के लिए और भी खतरनाक है, इसलिए इसकी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि माता-पिता ऐसी तिथियों पर अपने बच्चों पर विशेष ध्यान दें, ताकि उनके बच्चे इस तरह के बुरे और शापित त्योहारों से बच सकें। यह विश्वासघात, झूठ और धोखे का त्योहार है, जिसका उत्सव प्यार को नीलाम करने के समान है। लड़कियों को इस दिन का खुले तौर पर बहिष्कार करना चाहिए, क्योंकि यह त्योहार अच्छे समाज के न सिर्फ खिलाफ है, बल्कि यह अश्लीलता और बेशर्मी पर आधारित है, जो समाज के बीच अश्लीलता फैलाने की एक यहूदी साजिश है। यह एक ऐसे व्यक्ति की याद में मनाया जाता है, जिसने अवैध संबंध बनाने की अनुमति दी थी। एक पुरुष और एक महिला बिना शादी के, जिसके लिए उन्हें 1488 ईस्वी में फांसी दी गई थी। तब से, उनके अनुयायी उनकी याद में हर साल वेलेंटाइन डे मनाने लगे हैं, जो विभिन्न समाज के लिए अनुचित है। आश्चर्य की बात है कि इस त्योहार को मनाने में गैर शादी शुदा लड़के और लड़कियां भी गर्व महसूस कर रहे हैं, जो दुखद है। अंत में कमर मिसबाही ने कहा कि हम सब को ऐसे त्योहार का सम्पूर्ण बॉयकाट करना चाहिए।

जीविका सामुदायिक समन्वयक को दी विदाई

बोखड़ा (सीतामढ़ी) : बोखड़ा प्रखंड के बुधनगरा गांव में दीपमाला जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ के कार्यालय में जीविका सामुदायिक समन्वयक शम्भू

कुमार झा के स्थानातरण पर विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इसका नेतृत्व डीआरपी शम्भू कुमार रजक ने किया। वहीं, उन्हें मिथिला की

मिथिला डायरी

परम्परा के तहत पाग, शॉल, अंग वस्त्र एवं पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया। सभी कर्मियों ने उन्हें नम आंखों से विदाई दी। सामुदायिक समन्वयक का स्थानांतरण जिले के पुपरी प्रखंड में हुआ है। श्री झा ने सभी कैडर एवं कर्मचारी के साथ मिलकर संतोषजनक कार्य करने के लिए दिल से धन्यवाद दिया और अपने द्वारा किए गए कार्यों को विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने सभी जीविका कैडरों के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामना दीं। मौके पर डीआरपी शम्भू कुमार रजक, बुक कीपर राकेश कुमार यादव, एमबीके चंद्रिका कुमारी, विभा कुमारी, वीआरपी अमनदीप कुमार, रेणु कुमारी, रिंकू कुमारी, शबनम आरा, सुरेश प्रसाद, कंचन कुमारी, पार्वती देवी, माधुरी कुमारी, उषा देवी, मिथिलेश ठाकुर,वीणा देवी, मधु देवी आदि मौजूद थे।

झारखंड में खाद्यान्न हाहाकार के आसार

नाराजगी... कृषि उपज एवं पशुधन विपणन विधेयक के खिलाफ राज्य भर के खाद्य व्यवसायियों का आक्रोश चरम पर

कार्यालय संवाददाता

बोकारो/रांची : झारखंड राज्य कृषि उपज एवं पशुधन विपणन विधेयक 2022 के खिलाफ राज्य में व्यवसासियों का आक्रोश चरम पर है। वे लगातार इस बिल को खारिज करने की मांग कर रहे हैं और उनका आंदोलन अब आक्रामक रूप ले चुका है। बीते बुधवार को एक ही दिन की अपनी हड़ताल में उन्होंने दिखा दिया कि खाद्यान्न की दुकानें बंद होने से बाजार पर क्या असर होता है और आमजनों को क्या कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं। झारखंड सरकार के कृषि विधेयक के खिलाफ बोकारो, चास सहित पूरे राज्य के व्यवसायियों का आक्रोश फूट पड़ा। शहर की तमाम खाद्यान्न दुकानें बंद रहीं और दिनभर लोगों को रसद सामग्री की खरीदारी के लिए भारी परेशानी हुई। सभी दुकानदार पूरी तरह हड़ताल पर रहे। बाजारों में आमलोग दुकान बंद पाकर लौटते दिखे। व्यवसायियों का कहना है कि अगर सरकार ने इस विधेयक को वापस नहीं लिया तो वे लोग अनिश्चितकाल के लिए हड़ताल पर चले जाएंगे और ऐसा अगर हुआ, तो निश्चय ही खाद्यान्न का हाहाकार पूरे राज्य में मच जाएगा।

बोकारो में चेंबर के अध्यक्ष प्रदीप सिंह ने कहा कि प्रदीप सिंह ने कहा कि बार-बार अनुरोध के बावजूद कृषि मंत्री ने पिछले दरवाजे से झारखंड राज्य कृषि उपज एवं पशुधन विपणन विधेयक 2022 को लागू कर दिया।

इसके खिलाफ व्यवसायियों ने पहले काला बिल्ला लगाकर विरोध जताया, अपने प्रतिष्ठानों पर काला झंडा लगाए और उसके बाद अपने-अपने प्रतिष्ठानों को बंद कर रांची में आगे की रणनीति पर मंथन किया। बोकारो चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के उपाध्यक्ष अनिल गोयल एवं कार्यक्रम संयोजक राजकुमार जायसवाल के नेतृत्व में बड़ी संख्या में चास-बोकारो के व्यवसायी अपने अपने प्रतिष्ठानों को बंद कर रांची के मोरहाबादी स्थित संगम गार्डन में राज्य स्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए पहुंचे। फेडरेशन ऑफ झारखंड चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के आह्वान पर बुलाई गई इस बैठक में कृषि विधेयक 2022 एवं बाजार समिति शुल्क लगाने के विरोध में आंदोलन के आगे की रणनीति तय करने के लिए बुलाई गई थी। रांची जाने वाले व्यवसायियों में शिवहरि बंका, प्रेम अग्रवाल, पवन अग्रवाल, विप्पलाद, शम्भु गुप्ता, महेश मंडल, संजय सिंह, दीपक अग्रवाल, रंजीत, मनोज गिरि, भोला साव, कमलेश जायसवाल, काशीनाथ सिंह नागेश्वर प्रसाद, ज्ञानचंद जायसवाल, मुन्ना सिंह, सोनू शाह, दिलीप कुमार, सुरेश अग्रवाल, मिंटू मंडल, संतोष कुमार आदि शामिल थे।

नए कानून से बढ़ेगा भ्रष्टाचार, इंस्पेक्टर-राज होगा कायम : बैद

संरक्षक संजय बैद ने इसे काला कानून बताते हुए कहा कि इससे खाद्यान्न से जुड़े झारखंड के किसानों, व्यापारियों एवं उपभोक्ताओं को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। बैद ने कहा कि विधेयक लागू होने से भ्रष्टाचार बढ़ेगा और पुनः इंस्पेक्टर-राज कायम हो जाएगा। चेंबर के उपाध्यक्ष अनिल गोयल ने कहा कि व्यवसायी इस कानून का पुरजोर विरोध करेंगे और जनहित तथा राज्य हित में सरकार को इसे वापस लेना ही पड़ेगा। चेंबर के सचिव राजकुमार जायसवाल ने कहा वह बोकारो की धरती पर इस काले कानून का विरोध प्रारंभ हो गया है और इसकी गूंज अब पूरे राज्य में सुनाई देगी। रामडीह मोड़ खाद्यान्न व्यवसायिक संघ के अध्यक्ष काशीनाथ सिंह ने कहा कि व्यापारी सदन से सड़क तक सरकार से लड़ाई लड़ने के लिए अपनी कमर कस चुके हैं। कृषि बाजार के हनुमान अग्रवाल ने कहा कि संगठन में ही शक्ति है और व्यवसायी संगठित होकर इस लड़ाई को लड़ेंगे। बेरमो के सुरेश बंसल ने कहा बिहार, बंगाल और उत्तर प्रदेश में भी बाजार शुल्क को हटा दिया गया है, जबकि झारखंड में धोखे से दोबारा लगाया जा रहा है।

बिन शिव सब सून

18 फरवरी, 2023 : महाशिवरात्रि पर विशेष

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

एवं परस्परेक्षा शक्ति शक्तिमतोः स्थिता
न शिवेन विना शक्तिर्न शक्तया विना शिवः

शिव पुराण के अनुसार शिव और शक्ति को सदा-सदा एक-दूसरे की अपेक्षा रहती है। न शिव के बिना शक्ति रह सकती हैं और न शक्ति के बिना शिव रह सकते हैं। शिव में शक्ति, अथवा शक्ति के शिव? यह प्रश्न कुछ ऐसा है, मानों आपसे पूछा जाय कि आप किसकी संतान हैं? माता की या पिता की? जैसे आपमें मां का स्त्रीत्व और पिता का पुरुषत्व मिल गया है, वैसे ही शिव और शक्ति एकाकार हो गये हैं। अर्धनारीश्वर रूप में शिव और शक्ति की एकता का चरम रूप दिखता है।

देखने में बेशक दो व्यक्तित्व लगते हैं, शिव और शक्ति, पर हैं नहीं। शक्ति जो प्रकृति में अभिव्यक्त होती है, उसके पुरुष शिव हैं और शिव तो कल्याण के पर्याय हैं, उनकी ऊर्जा, शक्ति ही तो हैं। बिना शक्ति के शिव के लिए सृष्टि निरर्थक है और उनका ताण्डव सृष्टि को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है, ..और जब शक्ति, शिव का अपमान देखती हैं, तब उसी क्षण से जीवन उनके लिए मृत्यु से अधिक पीड़ादायक हो जाता है और यज्ञ कुण्ड में प्राणाहुति दे देती हैं शक्ति, क्योंकि शक्ति के लिए, बिन शिव सब सून।

जगत के नियंता शिव हैं, जिन्होंने महाकाल के रूप में समय को अपने अधीन किया हुआ है। यह सृष्टि शिव की है, उसमें स्थित है और प्रलय काल में उन्हीं में विलीन होती है। यही कारण है कि इस जगत के प्रति शिव की संवेदना बेजोड़ है, नहीं तो अमृत मंथन के समय विष-पान कैसे कर सकते थे नीलकण्ठ? शिव में ना तो राग है और ना द्वेष, निष्पृह (निःस्वार्थ) भाव में शिव तप में तल्लीन हैं। पर इस जगत को तो चलाना पड़ेगा और यह कार्य शक्ति करती हैं। स्वयं शिव भी उनसे प्रश्न करते हैं।

शिव उवाच -

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्व कार्य विधायिनी।
कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥

हे देवी, तुम भक्तों के लिए सुलभ हो और समस्त कर्मों का विधान करने वाली हो। कलियुग में कामनाओं की सिद्धि हेतु, यदि कोई उपाय हो, तो उसे अपनी वाणी द्वारा सम्यक रूप से कहो।

कामनाएं सृष्टि के मूल में हैं और इन कामनाओं का मोह जाल शक्ति ने व्याप्त किया है। शिव का क्या है? बाघम्बर धारण किये हैं, श्मशान का भस्म उनका श्रृंगार है और कैलाश पर तप में तल्लीन हैं, पर जगत को मोह चलाता है। शिव की तरह निःस्वार्थ होने पर सृष्टि का संवर्धन कैसे होगा? इसलिए शक्ति ने मोह का माया-व्यूह जाल फैलाया है।

ऊँ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति

मोह में लिप्त हम सब शक्ति की शरण लेते हैं। शक्ति के रूपों का विस्तार सरस्वती, लक्ष्मी और काली में है और इन तीनों रूपों में शक्ति हमारी कामनाओं पर तथास्तु की मुहर लगाती हैं। शिव तो जोड़-तोड़ से परे हैं, वे तो कुछ भी दे दें, जैसे भस्मासुर को वर दे दिया, पर शक्ति सृष्टि के नियम से बंधी हैं। उन्हें ज्ञात है कि कौन कितनी कृपा के लायक है। इन मायाजाल रूपी कामनाओं में उलझकर जब मनुष्य धर्म से विमुख हो जाता है, उस क्षण शक्ति क्रुद्ध होकर काली का रूप धारण कर लेती हैं। तब शक्ति को शान्त करने शिव आते हैं, पर शिव ना तो शक्ति से वाद-विवाद करते हैं और ना ही उन्हें आज्ञा देते हैं। वे शक्ति के नीचे लेट जाते हैं। पूर्ण समर्पण, क्योंकि शिव का शक्ति के प्रति अथाह स्नेह है। इस स्नेह में मालकियत का भाव नहीं है। सृष्टि शिव की है और इसके सम एवं विषम तत्व शिव ने अंगीकार कर लिये, उन्हें इन तत्वों से विरोध नहीं है, पर शक्ति जब मनुष्य को रक्तबीज समान ईच्छाओं में ग्रस्त देखती हैं, उस क्षण शक्ति रुष्ट हो जाती हैं और फिर सिवाय शिव के उन्हें कौन शांत कर सकता है?

पूरक हैं शिव और शक्ति : शक्ति मूलाधार में स्थित हैं और शिव सहस्त्रार में, पर शिव नीचे नहीं उतरते हैं, शक्ति से मेल करने, बल्कि शक्ति सारे चक्रों का भेदन कर मिल जाती हैं शिव से, क्योंकि शक्ति, बिना शिव के रह नहीं सकतीं। पर शिव परमयोगी हैं। वे सृष्टि के नियमों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं, क्योंकि शिव निर्विकार और निश्छल हैं।

शिव और शक्ति का संयोग : प्रतीकात्मक रूप में शिव का त्रिकोण ऊर्ध्वमुखी है, जो सहस्त्रार की दिशा में उन्मुख है और शक्ति का त्रिकोण अधोमुखी है, जो मूलाधार की दिशा में प्रवृत्त है। शिव और शक्ति के मेल का प्रतीक षटकोणीय त्रिभुज अर्थात् अनाहत चक्र, मनुष्य के हृदय में स्थित है। सृष्टि की रचना में शिव और शक्ति की ऊर्जाओं का समन्वय होता है और शक्ति की भावनाएं शिव के शांत मन में संवेदनाओं का संचार करती हैं। कामदेव को दग्ध कर देने वाले महायोगी शिव, शक्ति के प्रेम में विह्वल हो जाते हैं और यही सृष्टि का सबसे बड़ा रहस्य है। जिस प्रकार सूर्य और उसकी रोशनी, दूध और उसकी धवलता, अग्नि और उसकी ऊष्मा अभिन्न है, उसी प्रकार शिव और शक्ति अभिन्न हैं, एक-दूसरे में समाहित हैं। बिना शक्ति की आराधना के शिव कैसे प्राप्त होंगे?

कैसे हो शक्ति तत्व का स्थापन?

शक्ति किसे नहीं चाहिए? जीवन का समस्त संघर्ष या तो शक्ति पर आधिपत्य जमाने के लिए है, या फिर शक्ति के दुरुपयोग की कथा है। शक्ति स्त्री तत्व है और यह शिवत्व के बिना अधूरी है। वस्तुतः शक्ति का स्त्रोत हम सबके अन्दर है और हमारे घरों में स्त्रियां, शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। जब तक स्त्री और पुरुष, शक्ति और शिव आपके घर, आपके मन में समान भाव भूमि पर निवास नहीं करेंगे, तब तक आप अपने अन्तरमन में छुपी शक्ति से परिचित नहीं हो पायेंगे। शक्ति तत्व को जागृत करने के लिए आपको पहले अपने मन में छुपे शिव भाव से एकाकार होना पड़ेगा। शिव की तरह शक्ति को अपने वामांग में स्थापित कीजिये और अपने परिवार में स्त्रियों को घर के मसलों पर बोलने की, राय देने की स्वतंत्रता दीजिये। घर की चहारदीवारी से बाहर की दुनिया उन्हें देखने दीजिये। बेटियों को उसी भांति शिक्षा दीजिये, जिस प्रकार आप बेटों को देंगे। अगर वेदमाता का स्थान देवी गायत्री (शक्तिरूप) को प्राप्त है, तो फिर कन्या और पुत्र की शिक्षा में आप कैसे भेद कर सकते हैं?

गुरु शिव रूप में आते हैं या शक्ति रूप में?

इस गुत्थी को सुलझाने के लिए यह जानना जरूरी है कि आप गुरु के समक्ष किस अपेक्षा से जाते हैं? आम तौर पर या तो आपको गुरु दे दिये जाते हैं या फिर आप धक्के खा-खाकर उन तक पहुंचते हैं। अगर गुरु आपको दिये गये हैं, अर्थात् आपके माता-पिता गुरु मुखी हैं और उन्होंने आपको भी दीक्षा दिलायी है, तो कहीं ना कहीं आपको यह जरूर बताया गया होगा कि गुरु के शरणागत होने पर आपके जीवन के संघर्ष और समस्याएं समाप्त हो जायेंगी। इसका तात्पर्य है कि आप गुरु से पराशक्ति, वह शक्ति जो दिखाई नहीं देती, पर जिससे सारी सृष्टि गतिमान है, से ऊर्जान्वित होने की अपेक्षा लेकर आये हैं, जिसके फलस्वरूप आप जीवन की बाधाओं का शमन कर सकें। जब शक्तिपात की क्रिया गुरु और शिष्य के मध्य होती है, उस क्षण गुरु, मातृ रूप में आपको सिंचित करते हैं। शक्ति तो स्त्री तत्व है, और गुरु प्रार्थना में आप दुहराते हैं, त्वमेव माता च पिता त्वमेव, अर्थात् आप मातृ (स्त्री) और पितृ (शिव), दोनों रूपों का समावेश देखते हैं। इसीलिए गुरु में शक्ति और शिव एकाकार हैं, क्योंकि

गुरु साक्षात् परम् ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

राजभाषा के प्रसार-प्रसार को गति देना आवश्यक : अमरेंदु

बीएसएल में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित

संवाददाता
बोकारो : बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी, अधिशासी निदेशक (परियोजनाएं) सी आर महापात्रा, अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) एस. रंगानी, अधिशासी निदेशक (सामग्री प्रबंधन) अमिताभ श्रीवास्तव, अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) आर. प्रसाद, विभिन्न विभागों के मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधक (संपर्क एवं प्रशासन) एनए सैफी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक के आरम्भ में उप महाप्रबंधक (संपर्क एवं प्रशासन) यूके सिंह ने सभी का स्वागत किया। वरीय प्रबंधक (संपर्क एवं प्रशासन) एवं राजभाषा अधिकारी शशांक शेखर ने बैठक की कार्यसूची पर प्रकाश डाला। बैठक के दौरान पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन की स्थिति, विभिन्न विभागों में हिंदी की प्रगति इत्यादि की समीक्षा की गई।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गति देने के लिए सभी विभागाध्यक्षों से वर्ष में कम से कम एक हिंदी कार्यशाला आयोजित करने का सन्देश दिया। साथ ही, अपने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने तथा गूगल वॉइस और अन्य ई टूल्स के उपयोग का आह्वान किया। बैठक का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन राजभाषा अधिकारी शशांक शेखर ने किया।

डाक विभाग ने तेज किया सुकन्या अभियान

प्ले स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्रों में चला रहे मुहिम

संवाददाता
बोकारो : डाक विभाग के माध्यम से सुकन्या समृद्धि योजना के तहत प्ले स्कूल एवं आंगनबाड़ी केन्द्र में सम्पर्क कर खाता खोलने की मुहिम बोकारो में लगातार जारी है। सहायक डाक अधीक्षक शंकर कुजूर, बोकारो एवं प्रधान डाकघर, सेक्टर-2 के डाकपाल सतीश कुमार के निरीक्षण विशेष में दुंदीबाद में अभियान चलाया गया। विपणन अधिकारी कौशल कुमार उपाध्याय, प्रदीप कुमार पाण्डेय एवं कैलाश कुमार गुप्ता सहित अन्य डाककर्मी अभियान में शामिल थे। उपाध्याय ने कहा कि आमजन जिनकी बेटी 10 वर्ष से उम्र की है, वो अपने नजदीकी डाकघर जाकर मात्र 250 रुपए से खाता खोल सकते हैं।

इसके बाद रितुडीह में मुखिया रेणु देवी के विशेष सहयोग से मुखिया कार्यालय में सुकन्या समृद्धि खाता खोलने का विशेष अभियान चला। इसके तहत बच्चियों का डाकघर में खाता खोला गया। इस मुहिम को सफल बनाने के लिए कौशल कुमार उपाध्याय, प्रदीप कुमार पाण्डेय, कैलाश कुमार गुप्ता, आदेश पाठक आदि की अहम भूमिका रही।

गुदगुदी

एक डाक्टर से पागल मरीज- डॉक्टर साहब, आप पिछले डॉक्टर से ज्यादा अच्छे हैं।
डॉक्टर (खुश होकर)- क्यों?
पागल मरीज (उत्साहित होकर)- क्योंकि आप हम लोगों जैसे ही लगते हैं।

एक बन्दा इलेक्शन में किस्मत आजमा रहा था, उसे सिर्फ तीन वोट मिले, उसने सरकार से जेड प्लस सुरक्षा की मांग की...
जिले के डीएम ने कहा- आप को सिर्फ 3 वोट मिले हैं आप को जेड+ कैसे दे सकते हैं?
आदमी बोला - जिस शहर में इतने लोग मेरे खिलाफ हों तो मुझे सुरक्षा मिलनी ही चाहिए!!!'

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल में शिल्पी रहते हैं
निशि-दिन कुछ गढ़ते रहते हैं
खोंते, छत्ते, बिल और कोटर
दूह, कन्दरे, खोहर सुन्दर
ये जीवों के बनें आश्रय
सब घर को करते हम-सा ही प्यार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

चल जंगल चल, चल जंगल
सूक्ष्म जीव या जन्तु विशाल
जीवाणु-कीटाणु कराल
जन्में, विकसित हों जंगल में
जल में, थल में या दल-दल में
इसके भीतर संगुफित हैं
जीवन-मृत्यु के सारे व्यापार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल
(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

जी-20 बैठकों को लेकर राजधानी तैयार

देवेन्द्र शर्मा
रांची : झारखंड की राजधानी रांची में जी-20 शिखर सम्मेलन की दो बैठकें 16-17 फरवरी और 16-17 मार्च को होनी है। इसके मद्देनजर झारखंड पुलिस की बैठकें लगातार बैठक हो रही हैं। पहले चरण की बैठक को लेकर तैयारी अब अंतिम चरण में है। बैठक में दूसरे देश से आने वाले प्रतिनिधियों की सुरक्षा में किसी भी प्रकार की चूक न हो, इसे लेकर झारखंड पुलिस मुख्यालय में पिछले दिनों एडीजी अभियान की अध्यक्षता में पुलिस के शीर्ष अधिकारियों की बैठक हुई। झारखंड पुलिस मुख्यालय ने इस सम्मेलन के दौरान सुरक्षा के लिए राज्यस्तरीय सुरक्षा समन्वय समिति का गठन किया है। समिति के नोडल सुरक्षा अधिकारी एडीजी अभियान संजय आनंदराव लाटकर बनाए गए हैं। उनके नेतृत्व में आठ आईपीएस अधिकारी जी-20 शिखर सम्मेलन की सुरक्षा की कमान संभालेंगे, जो समिति के सदस्य होंगे। सुरक्षा व्यवस्था की कमान संभालने वाले आईपीएस अफसरों में आईजी प्रभात कुमार, आईजी अभियान एवी होमकर, सीआईएसएफ के आईजी हेमराज गुप्ता, विशेष शाखा के डीआईजी अनूप बिरथरे, कमांडेंट वाईएस रमेश, एटीएस के एसपी सुरेंद्र कुमार झा और बिरसा मुंडा एयरपोर्ट के क्षेत्रीय निदेशक अशोक लकड़ा शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता भारत कर रहा है। इस दौरान 200 से अधिक बैठकें होंगी। झारखंड की राजधानी रांची में 16-17 फरवरी और 16-17 मार्च को दो बैठकें प्रस्तावित हैं। इसमें संबंधित देशों के साढ़े पांच सौ से अधिक प्रतिनिधि शामिल होंगे।

दो साल बाद बोकारो में फिर होगी विद्यापति स्मृति पर्व समारोह की धूम

इस बार 8-9 अप्रैल को आयोजन, तैयारी शुरू

संवाददाता
बोकारो : सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद की कार्यकारिणी की बैठक सेक्टर-4 स्थित मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के सभागार में आयोजित हुई। परिषद के महासचिव अविनाश कुमार झा की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में परिषद द्वारा मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल परिसर में 17 फरवरी को रक्तदान शिविर लगाने सहित होली मिलन कार्यक्रम व विद्यापति स्मृति पर्व समारोह सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई। परिषद के महासचिव अविनाश झा ने बताया कि परिषद द्वारा इस वर्ष दो दिवसीय विद्यापति स्मृति पर्व समारोह का आयोजन 8 व 9 अप्रैल को भव्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ होगा। बता दें कि विगत दो वर्षों से कोरोनाकाल के कारण यहां विद्यापति पर्व समारोह का आयोजन नहीं हो सका था। बैठक में परिषद के कोषाध्यक्ष प्रदीप कुमार झा, योजना सचिव मिहिर कुमार झा राजू, सहायक सचिव अविनाश झा अवि, सुनील चौधरी, प्रेस सचिव अरुण पाठक, कार्यकारिणी सदस्य गंगेश कुमार पाठक, मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के उपाध्यक्ष जय प्रकाश चौधरी, सचिव पी के झा चंदन, संयुक्त सचिव नीरज चौधरी आदि उपस्थित थे।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा**, फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

हमारा देश क्षमतावान, हम नई ऊंचाइयां पाने में सक्षम : मोदी

इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथेरेपिस्ट के 60वें राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने बताई भारत की ताकत

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद में इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथेरेपिस्ट (आईएपी) के 60वें राष्ट्रीय सम्मेलन को एक वीडियो संदेश के माध्यम से संबोधित किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने फिजियोथेरेपिस्ट के महत्व को सांत्वना, आशा, सौम्यता और पुनर्स्वास्थ्य लाभ के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि एक फिजियोथेरेपिस्ट न केवल शारीरिक चोट का इलाज करता है, बल्कि रोगी को मनोवैज्ञानिक चुनौती से निपटने का साहस भी देता है।

प्रधानमंत्री ने फिजियोथेरेपिस्ट पेशे की व्यावसायिकता की सराहना करते हुए कहा कि शासन की भावना के अनुरूप कैसे उनमें आवश्यकता के समय सहायता प्रदान करने की समान भावना अंतर्निहित होती है। उन्होंने कहा कि बैंक खाते, शौचालय, नल का पानी, निःशुल्क चिकित्सा उपचार और सामाजिक सुरक्षा तंत्र के निर्माण जैसी बुनियादी जरूरतों के प्रावधान में सहायता के साथ, देश का गरीब और मध्यम वर्ग अब अपने सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमने दुनिया को दिखा दिया है कि वे अपनी क्षमता से नई ऊंचाइयों तक पहुंचने में सक्षम हैं।

इसी तरह, उन्होंने रोगी में आत्मनिर्भरता का भाव सुनिश्चित करने वाले इस पेशे की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत भी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पेशा 'सबका प्रयास' का भी प्रतीक है, क्योंकि रोगी और चिकित्सक दोनों को समस्या पर काम करने की जरूरत है और यह 'स्वच्छ भारत' और 'बेटी बचाओ' जैसी कई योजनाओं और जन आंदोलन में परिलक्षित होता है।

प्रधानमंत्री ने फिजियोथेरेपी की भावना को रेखांकित किया, जिसमें सामजस्यता, निरंतरता और दृढ़ विश्वास जैसे कई महत्वपूर्ण संदेश हैं, जो शासन की नीतियों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 'आजादी का अमृत महोत्सव' में, फिजियोथेरेपिस्ट को एक पेशे के रूप में बहुप्रतीक्षित मान्यता मिली, क्योंकि सरकार संबद्ध और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर विधेयक के लिए राष्ट्रीय आयोग लेकर आई, जो देश की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में फिजियोथेरेपिस्ट के योगदान को मान्यता देता है। श्री मोदी ने कहा कि इससे आप सभी के लिए भारत के साथ-साथ विदेशों में भी काम करना आसान हो गया है। सरकार ने आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन नेटवर्क में फिजियोथेरेपिस्ट को भी जोड़ा है। इससे आपके लिए रोगियों तक पहुंचना आसान हो गया है। प्रधानमंत्री ने फिट इंडिया मूवमेंट और खेलो इंडिया के वातावरण में फिजियोथेरेपिस्ट के लिए बढ़ते अवसरों की भी चर्चा की।

योग से जुड़ने पर बढ़ जाती है फिजियोथेरेपी की ताकत

फिजियोथेरेपी के अपने व्यक्तिगत अनुभव का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि मेरा अनुभव है कि जब योग की विशेषज्ञता को फिजियोथेरेपिस्ट के साथ जोड़ा जाता है तो इसकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। शरीर की सामान्य समस्याएं, जिनमें अक्सर फिजियोथेरेपी की जरूरत पड़ती है, कई बार योग से भी दूर हो जाती हैं। इसलिए आपको फिजियोथेरेपी के साथ-साथ योग भी जरूर जानना चाहिए। यह आपकी पेशेवर क्षमता को बढ़ाएगा। फिजियोथेरेपी पेशे का एक बड़े हिस्से के वरिष्ठ नागरिकों से जुड़े होने को देखते हुए, प्रधानमंत्री ने अनुभव और सरल-कौशल की आवश्यकता पर बल दिया और पेशेवरों से दस्तावेजों को सहेजते हुए उन्हें दुनिया के सामने अकादमिक दस्तावेज प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रस्तुत करने को कहा।

भूकंप जैसी स्थितियों में भी परामर्श सहायक

श्री मोदी ने इस क्षेत्र के विशेषज्ञों से वीडियो परामर्श और टेली-मेडिसिन के तरीके विकसित करने का भी अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि यह तुर्की में भूकंप जैसी स्थितियों में उपयोगी हो सकता है जहां बड़ी संख्या में फिजियोथेरेपिस्ट की जरूरत होती है और भारतीय फिजियोथेरेपिस्ट मोबाइल फोन के माध्यम से वहां मदद कर सकते हैं और फिजियोथेरेपिस्ट एसोसिएशन को इस दिशा में विचार करने को कहा। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन के समापन पर कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि आप जैसे विशेषज्ञों के नेतृत्व में, भारत फिट भी होगा और सुपर हिट भी होगा।

शिक्षित करने पर जोर

प्रधानमंत्री ने फिजियोथेरेपिस्ट से लोगों को उचित मुद्रा, सही आदतें, सटीक व्यायाम के बारे में शिक्षित करने के कार्य को अपनाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि यह जरूरी है कि लोग फिटनेस को लेकर सही दृष्टिकोण अपनाएं। उन्होंने कहा कि आप इसे लेख लिखने और व्याख्यान देने के माध्यम से कर सकते हैं और मेरे युवा मित्र इसे रील्स के माध्यम से भी दिखा सकते हैं।